बिना साधि-संगति, सामी सुधिरियो कोन को,
जाग्री कदु अंदर मों, बी सभ ममता मति,
पाए ग्याति गुरूअस जी, करि अभेद भग्ति,
त साखी ड्रिसें सति, चीटीअ ऐं कुंचर में.

सामी साहब कहते हैं कि साधु संत की संगत के बिना कोई भी मनुष्य सुधर नहीं सकता। अर्थात् ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए तुम भी जाग्रत हो कर अपने अंदर से मोह, ममता आदि विकार निकालो। उसके पश्चात् सत्गुरु से अंतर्ज्ञान प्राप्त कर परमेश्वर की अभेद भक्ति करो। ऐसा करने से ही तुम सत्य (परमेश्वर) के दर्शन कर सकोगे। तब तुम्हें चींटी और कुँजर (हाथी) में भी एकही परमेश्वर दिखाई देंगे।

सच्चे संत सत्य का आचरण करने वाले होते हैं। संत ब्रह्मज्ञानी होते हैं। सच्चे संत ईश्वरस्वरूप, ब्रह्मस्वरूप होते हैं। उन्हें जिस आत्मानंद का अनुभव प्राप्त होता है, वह समाज को भी अनुभव कराना चाहते है। संतों के संग सहवास में मनुष्य सुधर जाता है। अपना जीवन कल्याणमय और सफल करने के लिए सत्संग रूपी संजीवनी साथ में होना जरूरी है। जिस मनुष्य ने साधु संतों की संगत नहीं की है, वह वेद-पुराण पढ़ने के पश्चात् भी सच्चा लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। अपना चित्त निर्मल और पवित्र करने के लिए सत्संग करना ही चाहिए।

सतसंगति को फल यही, संशय रहहि न लेस।
होवंइ स्थिर शुचि सरल चित्त, पावै पुनि न कलेस॥

सामी साहब भी साधु-संतों की महिमा का वर्णन करते हैं। समाज के हित एवं कल्याण के लिए प्रतिबद्ध संतों के सहवास एवं उपदेश का लाभ प्राप्त करने की बात करते हैं। सत्संग एक आसान मार्ग है जीवन सफल करने का। कहा गया है कि 'सत्संग तारता है और कुसंग डुबाता है।' अच्छे लोगों का, सत्पुरुष एवं सज्जनों का सहवास सदा लाभदायक होता है। संतों की संगत मनुष्य को अधर्म, कुकर्म, झूट-कपट, अविचार और अविवेक से दूर करने वाली होती है। सामी साहब विनम्रता से सलाह देते हुए गुरु का ज्ञान प्राप्त कर भेद-भाव रहित भक्ति करने के लिए कहते हैं।

कबीर कलाह अरु कल्पना, सत्संगति से जाय।
दुःख वासो भागा फिरे, सुख में रहे समाय॥

■